भोजपुरी भाषियों की वाचिक हिंदी के व्याकरणिक पक्ष में मातृभाषा का व्याघात

(The Interference of Mother Tongue in Grammatical Aspect of the Verbal Hindi of Bhojpuri Speakers)

एम.फिल. हिंदी (भाषा प्रौद्योगिकी) उपाधि हेतु

लघु शोध-प्रबंध

सत्र : 2014-2015

ज्ञान शांति मैत्री

शोधार्थी

आलोक कुमार मिश्र

एम.फिल. हिंदी (भाषा प्रौद्योगिकी)

नामांकन संख्या- 2014/01/206/002

भाषा विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 के क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

गांधी हिल्स, वर्धा- 422005 (महाराष्ट्र)

फोन न.: 07152-201554 वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

आभार

बिना किसी के सहयोग के कोई भी कार्य पूरा नहीं किया जा सकता। मेरे शोधकार्य को पूर्ण कराने में कई व्यक्तियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिनका मैं हृदय से आभार व्यक्त करना चाहूँगा।

सर्वप्रथम मैं भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता एवं विभागाध्यक्ष आदरणीय प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने शोधकार्य के संदर्भ में आ रही तमाम समस्याओं को सुलझाते उचित दिशा-निर्देशन का कार्य किया।

मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ. हरीश.ए.हुनगुंद के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे विषय-चयन से लेकर शोधकार्य पूर्ण होने तक अपने ढंग से कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की, जिनके कुशल निर्देश एवं सूक्ष्म तात्विक दृष्टि से मुझे शोधकार्य पूर्ण करने में काफी मदद मिली है। इसके अतिरिक्त उन्होंने मुझे इस कार्य के लिए आत्मविश्वास एवं प्रोत्साहन भी प्रदान किया अन्यथा मेरा यह कार्य पूरा होकर भी अधूरा रह जाता।

इसके अतिरिक्त मैं भाषा विद्यापीठ के गुरुजानों प्रो. उमाशंकर उपाध्याय, प्रो. अनिल कुमार पाण्डेय, डॉ. अनिल कुमार दुबे, डॉ. धनजी प्रसाद के प्रति आभारी हूँ जिनसे मुझे शोधकार्य में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से हर संभव सहयोग मिलता रहा।

मैं भाषा विद्यापीठ के सभी अग्रजों एवं सभी सहपाठियों का भी आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिन्होंने मेरे शोधकार्य के लिए अपना अमूल्य समय देने के साथ-साथ इसे पूर्ण होने तक काफी सहयोग किया एवं उचित मार्गदर्शन भी दिया।

मैं अपने पूजनीय माता-पिता, दादा-दादी, भैया-भाभी तथा परिवार के सभी सदस्यों का ऋणी हूँ जिन्होंने मुझे अपने स्नेह और आशिर्वाद के साथ-साथ पारिवारिक बंधनों से मुक्त रखते हुए सदैव उच्च शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्रदान किया।

अंत में मैं अपने जीवन संगिनी श्रीमती लक्ष्मी मिश्रा एवं अपनी सुपुत्री पिहू मिश्रा का भी आभारी हूँ जिन्होंने मुझे उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया एवं घर-परिवार के पारिवारिक बंधनों से मुक्त रखा।

अनुक्रमणिका

पृष्ठ सं.

भूमिका 5-6

साहित्य पुनरवलोकन 7-8

प्रथम अध्याय : हिंदी एवं भोजपुरी भाषा का परिचय एवं संरचना 9-39

1.0 भोजपुरी एवं हिंदी भाषा का परिचय : तुलना

1.1 भोजपुरी एवं हिंदी भाषा की संरचना : तुलना

1.2 भोजपुरी एवं हिंदी भाषा की व्याकरणिक व्यवस्था :तुलना

द्वितीय अध्याय : हिंदी एवं भोजपुरी भाषा में अन्विति 41-52

2.0 अन्विति की अवधारणा एवं स्वरूप

2.1 अन्विति की परिभाषा

2.2 अन्विति के प्रकार

2.2.1 कर्ता-क्रिया की अन्विति

2.2.1.2 कर्म-क्रिया की अन्विति

2.3 भोजपुरी भाषा में अन्विति

2.4 कर्ता-क्रिया की अन्विति

2.5 कर्म-क्रिया की अन्विति

तृतीय अध्याय : भोजपुरी भाषियों की वाचिक हिंदी पर मातृभाषा का व्याघात 53-77

3.0 मातृभाषा व्याघात

3.1 मातृभाषा व्याघात के स्तर

3.2 भोजपुरी भाषियों के उच्चारण के संदर्भ में

1. ध्वनि स्तर
2. शब्द स्तर
3. वाक्य स्तर

उपसंहार 79-80

संदर्भ ग्रंथ-सूची 81-82

भूमिका

भाषा संप्रेषण का प्रभावशाली एवं सर्वसमर्थ साधन है। दूसरे के विचारों तथा अभिव्यक्तियों को सुनने के साथ ही साथ अपने विचारों तथा भावों को वाणी के माध्यम से अभिव्यक्त करने की प्रवृत्ति मानव का सहज स्वभाव है।

किसी क्षेत्र के लोग जब किसी दूसरी भाषा को बोलते हैं तो उनमें अपनी भाषा के कौन से तत्व प्रभाव डालते हैं या व्याघात उत्पन्न करते हैं, यह दोनों भाषाओं की प्रकृति पर निर्भर करता है। इसके अतिरिक्त हिंदी और भोजपुरी के सापेक्ष देखा जाए तो जिस क्षेत्र के लोग की मातृभाषा भोजपुरी होती है हिंदी प्रथम भाषा का कार्य करती है। इसलिए भोजपुरी क्षेत्र में औपचारिक व्यवहार के क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग होता ही है। इस कारण भोजपुरी क्षेत्र के लोग चाहे सिक्षित हों या अशिक्षित, हिंदी बोलते हैं किंतु उनकी हिंदी में भोजपुरी की पर्याप्त फुट या प्रभाव रहता है। किसी व्यक्ति के हिंदी बोलने में भोजपुरी का कितना या कैसा प्रभाव रहेगा उसकी पृष्ठभूमि पर निर्भर करती है।

जिन लोगों के कार्यों या व्यवहार में हिंदी से अधिक निकटता होती है उनकी हिंदी अपेक्षाकृत अधिक अच्छी होती है, जैसे- कार्यालय में कार्य करने वाले लोग, वकील, इंटर कालेज या उससे ऊपर कषाओं से जुड़े अध्यापक और छात्र आदि। इसके विपरीत जिनका हिंदी संबंधी कार्यों से प्रत्यक्ष या सामान्यतः लगाव नहीं होता उनकी भोजपुरी हिंदीकृत होती है जैसे– किसान, मजदूर, गृहणी आदि

अतः भोजपुरी क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के लोगों द्वारा हिंदी बोले जाने पर उनमें भोजपुरी पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है या व्याघात उत्पन्न होता है यह एक विचारणीय प्रश्न है। इसे ही ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोधकार्य का चयन किया गया है। शोधकार्य की सफलता इस बात पर निर्भर करती है की शोधकर्ता ने अपनी विषय-वस्तु के संबंध में कितनी वास्तविक एवं विश्वसनीय सूचनाओं तथा तथ्यों का संकलन किया है। किसी भी विषय पर शोध करने के लिए शोधकर्ता को कई प्रकार की सूचनाएँ या तथ्य एकत्रित करने पड़ते हैं।

उदाहरणार्थ जब भोजपुरी भाषी हिंदी भाषा में संप्रेषण करते हैं तो वहाँ उनके मातृभाषा का प्रभाव लक्ष्य भाषा पर दिखाई पड़ता है। जैसे– वकील का बकील, यहाँ ध्यान देने योग्य बात है की क्षेत्र (चंदौली) विशेष में 'व' का 'ब' होता है, अन्यथा अन्य स्थानों पर 'व' का 'ओ' हो जाता है।

यह शोधकार्य भोजपुरी भाषियों के हिंदी बोलते समय उनके द्वारा किए जाने वाले मातृभाषा व्याघात को लेकर किया गया है। जिसमें यह देखा गया है की उनके द्वारा हिंदी में संप्रेषण करते समय कहाँ और किन स्तरों पर मातृभाषा व्याघात का प्रभाव पड़ता है। जब भोजपुरी भाषी हिंदी भाषा में संप्रेषण करते हैं तो वहाँ मातृभाषा का प्रभाव लक्ष्य भाषा पर पड़ता है। जैसे- भोजपुरी भाषी जब हिंदी

के शब्द 'यज्ञ' का उच्चारण करता है तो वहाँ पर मातृभाषा व्याघात के कारण 'यज्ञ' न कहकर 'जग' का उच्चारण करता है जिससे ध्वनि और अर्थ दोनों स्तरों पर अंतर हो जाता है। जिसके कारण अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

इस शोध कार्य को पूरा करने में मुख्य रूप से तीन स्थानों बक्सर, गाजीपुर और चंदौली जिले के अंतर्गत कुछ प्रमुख स्थानों का चयन किया गया है। जहाँ पर भोजपुरी भाषियों के वाचिक हिंदी पर मातृभाषा का व्याघात का प्रभाव पाया गया। यह व्याघात भाषा के प्रत्येक स्तर पर हुआ हैं। जैसे– ध्वनि स्तर, शब्द स्तर और वाक्य स्तर पर आदि।

प्रस्तुत शोध कार्य में क्षेत्र अध्ययन (Field Study) गुणात्मक शोध प्रविधि और समाज भाषावैज्ञानिक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इस शोध कार्य की रूप रेखा को तीन अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत 'हिंदी एवं भोजपुरी भाषा का परिचय एवं भाषिक संरचना के साथ-साथ भोजपुरी एवं हिंदी भाषा का परिचय, भोजपुरी एवं हिंदी भाषा की संरचना, भोजपुरी एवं हिंदी भाषा की व्याकरणिक व्यवस्था के बारे में बताया गया है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत ' हिंदी एवं भोजपुरी भाषा में अन्वित, अन्विति की अवधारणा एवं स्वरूप के साथ-साथ अन्विति की परिभाषा, अन्विति के प्रकार, कर्ता-क्रिया की अन्विति, कर्म-क्रिया की अन्विति, भोजपुरी भाषा में अन्विति, कर्ता-क्रिया की अन्विति, कर्म-क्रिया की अन्विति के बारे में बताया गया है।

वहीं **तृतीय अध्याय के** अंतर्गत भोजपुरी भाषियों द्वारा हिंदी बोलते समय होने वाले व्याघात को भाषा के सभी स्तर पर विस्तारपूर्वक तालिक के माध्यम से दिखाया गया है।

शोध समस्या- प्रस्तुत शोध-प्रबंध में भोजपुरी भाषियों की वाचिक हिंदी के व्याकरनिक पक्ष में मातृभाषा का व्याघात में निम्नलिखित समस्याएँ आ सकती हैं।

जब भोजपुरी भाषी हिंदी का प्रयोग संप्रेषण में करते हैं तो मातृभाषा का व्याघात हिंदी पर होता है। जैसे- हिंदी में यह वाक्य लें। (गंगा नदी बहुत पवित्र है।) भोजपुरी भाषी इस वाक्य का उच्चारण इस प्रकार से करेंगे (गंगा नदी बहुत पबित्तर है।) इस प्रकार से विभिन्न प्रकार की समस्याएँ आ सकती हैं।

प्राक्कल्पना- प्रस्तुत शोध प्रबंध में भोजपुरी भाषियों की वाचिक हिंदी के व्याकरणिक पक्ष में मातृभाषा व्याघात के संदर्भ में भोजपुरी भाषियों की हिंदी पर मातृभाषा का प्रभाव कई स्तरों पर पड़ती है। जैसे- ध्वनि स्तर, शब्द स्तर एवं वाक्य स्तर पर दिखाई देती है।

साहित्य पुनरवलोकन- इस शोध विषय से संबंधित कार्य निम्न विद्वानों द्वारा किया गया है, इनके अलावा भोजपुरी क्षेत्र से जुड़े विद्वानों की कृतियों (पुस्तकों) के माध्यम से इस शोध कार्य में सहायता मिली है।

1. भाटिया, कैलाशचन्द्र– आधुनिक भाषा शिक्षण – इस पुस्तक में इन्होंने मातृभाषा व्याघात एवं उससे जुड़ी समस्याओं को बताया है। जिसमें इन्होंने मातृभाषा व्याघात को ध्वनि स्तर, शब्द स्तर एवं वाक्य स्तर पर विवेचन किया है।

2. तिवारी, भोलानाथ – हिंदी भाषा-शिक्षण – इस पुस्तक में इन्होंने मातृभाषा व्याघात से संबंधित प्रमुख पक्षों पर विचार करते हुए उनके बारे में विस्तृत रूप से बताया है।

3. तिवारी, उदयनारायण– भोजपुरी भाषा और साहित्य – उदयनारायण तिवारी ने अपनी पुस्तक भोजपुरी भाषा और साहित्य में भोजपुरी भाषा के स्वर एवं व्यंजनों के साथ ही साथ भोजपुरी भाषा का इतिहास एवं उसके परिचय को भी बताया है।

4. पत्रिकाएँ-गवेषणा– इस पत्रिका में मातृभाषा व्याघात से संबंधित सभी पक्षों पर विस्तृत रूप से चर्चा की गई है।

शोध प्रविधि- प्रस्तुत शोध कार्य में गुणात्मक शोध प्रविधि के साथ फील्ड अध्ययन (Field Study) शोध प्रविधि और समाज भाषावैज्ञानिक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

शोध चयन के उद्देश्य– इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य भोजपुरी भाषियों को लेकर है कि कैसे उनकी मातृभाषा का व्याघात हिंदी भाषा पर पड़ता है। इसमें भोजपुरी एवं हिंदी भाषा के व्याकरणिक पक्ष के संरचनात्मक अध्ययन के साथ विश्लेषण भी किया जा सके जिसके आधार पर भोजपुरी भाषियों की हिंदी भाषा पर मातृभाषा व्याघात के कारणों का पता चल सके।

शोध सामग्री स्रोत– शोध सामग्री स्रोत के रूप में भोजपुरी फिल्म, गीत एवं भोजपुरी भाषियों के वार्तालाप की रिकार्डिंग एवं क्षेत्रीय अध्ययन के आधार पर डाटा संकलित किए जाएँगे।

उपयोगिता– भोजपुरी क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण के दौरान इस शोध में वर्णित उच्चारणात्मक भेदों को ध्यान में रखने पर अधिक मानक शिक्षण किया जा सकता है। इस शोध प्रबंध के माध्यम से मातृभाषा व्याघात के कारण प्रकार और स्तर को समझा जा सकता है। इसका उपयोग भाषा शिक्षण में किया जा सकता है। वहीं तकनीकी पक्ष की बात करें तो इसका अनुप्रयोग मशीनी अनुवाद प्रणाली के वाक् से पाठ प्रणाली के अंतर्गत किया जा सकता है।

सीमाएँ– प्रस्तुत शोधकार्य में भोजपुरी भाषियों की वाचिक हिंदी के व्याकरणिक पक्ष में मातृभाषा का व्याघात, की सीमाएँ कुछ सीमित क्षेत्र (बक्सर, गाजीपुर, और चंदौली) जिले के कुछ प्रमुख स्थानों के अंतर्गत किया जाएगा।